सुविचार- अगर आप दूसरों के बारे में भी सोचते हैं तो आप सच्चे इंसान हैं.

कहानी

मूर्ख बगुला और चालाक केकड़ा

एक बार की बात है, एक घने और हरे-भरे जंगल में एक बहुत बड़ा और पुराना बरगद का पेड़ था। यह पेड़ इतना विशाल था कि उसकी शाखाएँ चारों तरफ फैली हुई थीं, और उसकी छाया में सैकड़ों जानवर आराम करते थे। इस पेड़ पर बगुलों का एक बड़ा समुदाय रहता था। बगुले अपने परिवारों के साथ इस पेड़ पर खुशी-खुशी रहते थे। उनके घोंसले पेड़ की ऊँची शाखाओं पर बने थे, जहाँ वे अपने बच्चों को पालते थे। बगुले दिन भर नदी किनारे मछलियाँ

पकड़ते और अपने बच्चों को खिलाते। उनकी ज़िंदगी हँसी-खुशी चल रही थीइ

लेकिन इस पेड़ के एक कोटर (खोखले हिस्से) में एक खतरनाक काला सर्प रहता था, जिसका नाम था कालिया. कालिया बहुत चालाक और क्रूर था. वह मौका मिलते ही बगुलों के उन छोटे बच्चों को खा जाता था, जिनके पंख अभी नहीं उगे थे. कालिया रात के अंधेरे में चुपके से घोंसलों तक पहुँचता और बगुलों के बच्चों को अपना शिकार बना लेता. बगुले इस बात से बहुत दुखी थे. वे हर रात डरते थे कि कालिया उनके बच्चों को नुकसान न पहुँचा दे. लेकिन उनके पास कोई उपाय नहीं था. वे कालिया से डरते थे, क्योंकि वह बहुत ताकतवर और जहरीला था.

एक दिन, बगुलों के समुदाय का एक बूढ़ा बगुला, जिसका नाम था सफेदू, बहुत दुखी हो गया. कालिया ने रात को उसके घोंसले से उसके दो छोटे बच्चों को मारकर खा लिया था. सफेदू का दिल टूट गया. वह अपने साथियों से बोला, हाय! यह कालिया हमें जीने नहीं देगा. वह हमारे बच्चों को एक-एक करके मार रहा है. हमें कोई उपाय करना होगा, वरना हमारा पूरा समुदाय खत्म हो जाएगा. लेकिन बगुले बहुत डरे हुए थे. किसी के पास कोई उपाय नहीं था.

दुखी होकर सफेदू नदी किनारे जाकर बैठ गया. वह रोने लगा. उसकी आँखें रो-रोकर लाल हो गई थीं, और उसकी साँसें हिचकियाँ ले रही थीं. वह बार-बार कह रहा था, मेरे बच्चे... मेरे बच्चे... अब मैं क्या करूँ? तभी नदी में रहने वाले एक चालाक केकड़े ने उसे रोते हुए देखा. उस केकड़े का नाम था चालू. चालू बहुत चतुर और धोखेबाज था. उसने सफेदू को रोते देखकर सोचा, यह बगुला तो बहुत दुखी है. शायद मैं इसका फायदा उठा सकता हूँ. चालू ने नदी से बाहर निकलकर सफेदू के पास जाकर कहा, मामा! आप आज इस तरह क्यों रो रहे हैं? क्या हुआ? सफेदू ने अपनी आँखें पोंछते हुए कहा, प्रिय चालू, क्या बताऊँ? हमारे पेड़ के कोटर में एक खतरनाक सर्प रहता है, जिसका नाम कालिया है. उसने मेरे सारे बच्चों को मारकर खा लिया. वह हर रात हमारे घोंसलों में घुसकर हमारे बच्चों को शिकार बनाता है. मैं बहुत दुखी हूँ. क्या तुम कोई उपाय बता सकते हो?

चालू ने सफेदू की बात सुनी और मन ही मन मुस्कुराने लगा. उसे पता था कि बगुले और केकड़े जंगल में एक-दूसरे के दुश्मन हैं. बगुले अक्सर नदी में मछलियाँ पकड़ने के लिए केकड़ों को परेशान करते थे. चालू ने सोचा, यह मेरा मौका है. मैं ऐसा उपाय बताऊँगा कि सर्प के साथ-साथ ये बगुले भी खत्म हो जाएँ. उसने चालाकी भरे लहजे में कहा, मामा, चिंता मत करो. मैं तुम्हारी मदद करूँगा. मेरे पास एक शानदार उपाय है. सफेदू ने उम्मीद भरी नज़रों से चालू की तरफ देखा और कहा, कैसा उपाय? जल्दी बताओ, चालू! चालू ने कहा, मामा, तुम मछलियों की हड्डियाँ इकट्ठा करो और उन्हें नेवले के बिल से लेकर कालिया के बिल तक बिखेर दो. जंगल में एक नेवला रहता है, जो मछलियों का मांस बहुत पसंद करता है. वह मछलियों की हड्डियाँ खाता हुआ कालिया के बिल तक पहुँच जाएगा. फिर वह कालिया को मारकर खा जाएगा. इस तरह तुम्हारी समस्या हल हो जाएगी.

सफेदू को चालू की बात समझ में आ गई. उसने खुशी-खुशी कहा, चालू, तुम बहुत बुद्धिमान हो! यह बहुत अच्छा उपाय है. मैं अभी अपने साथियों को बताता हूँ. लेकिन सफेदू ने यह नहीं सोचा कि चालू उसका हितचिंतक है या नहीं. वह अपनी मूर्खता में चालू की सलाह को सही मान बैठा.

सफेदू ने अपने सारे साथी बगुलों को बुलाया और चालू का उपाय बताया. बगुले खुश हो गए. उन्होंने कहा, यह तो बहुत आसान उपाय है. चलो, जल्दी से मछलियों की हड्डियाँ इकट्ठा करते हैं. सारे बगुले नदी किनारे गए और मछलियों की हड्डियाँ इकट्ठा करने लगे. उन्होंने दिन-रात मेहनत करके बहुत सारी हड्डियाँ जमा कर लीं. फिर उन्होंने नेवले के बिल से लेकर कालिया के बिल तक हड्डियों का एक रास्ता बना दिया.

कालिया अपने बिल में सो रहा था. नन्हा ने उसे देखा और सोचा, यह सर्प तो बहुत खतरनाक है. लेकिन मैं इसे हरा सकता हूँ. नन्हा ने तेज़ी से हमला किया और कालिया को मार डाला. कालिया की मृत्यु हो गई, और बगुले बहुत खुश हो गए. सफेदू ने अपने साथियों से कहा, देखो, चालू का उपाय काम कर गया! अब हमारा दुश्मन मर गया. बगुले खुशी मना रहे थे, लेकिन उनकी खुशी ज्यादा देर नहीं टिकी. नन्हा नेवला वहाँ से गया नहीं. उसे बगुलों के घोंसले दिखाई दिए, और उसने सोचा, यहाँ तो बहुत सारे बगुले हैं. मैं इन्हें भी खा सकता हूँ. नन्हा बहुत चालाक था. वह हर रात चुपके से पेड़ पर चढ़ता और एक-एक करके बगुलों को मारकर खाने लगा. बगुले डर गए. उन्होंने सोचा, हाय! हमने तो एक दुश्मन से छुटकारा पाने के लिए एक और बड़ा दुश्मन बुला लिया.

कुछ ही दिनों में, नन्हा ने सारे बगुलों को मार डाला. सफेदू भी नहीं बच सका. जब वह मरने वाला था, तो उसने पछताते हुए कहा, हाय! मैंने चालू की सलाह पर आँख मूंदकर भरोसा कर लिया. मुझे पहले सोचना चाहिए था कि चालू मेरा हितचिंतक है या नहीं. मेरी मूर्खता की वजह से मेरा पूरा समुदाय खत्म हो गया. उधर, चालू नदी किनारे बैठा हँस रहा था. उसने कहा, मूर्ख बगुले! मैंने तुम्हें ऐसा उपाय बताया कि तुम्हारा सारा समुदाय खत्म हो गया. अब मैं नदी में चैन से रह सकता हूँ.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

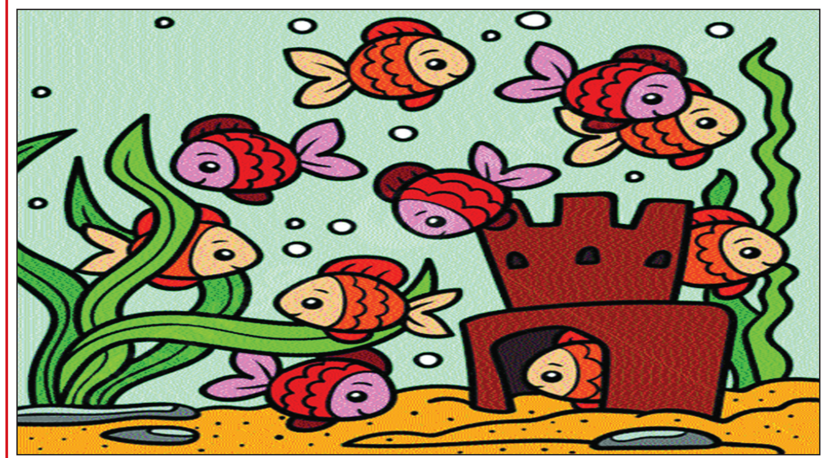

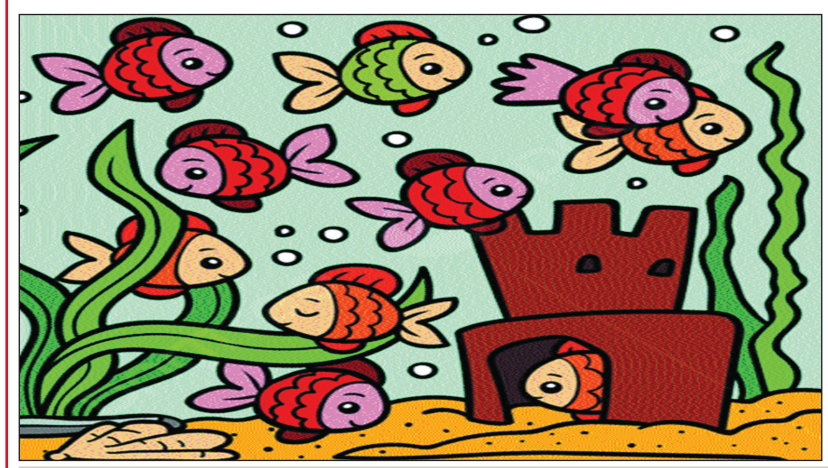

भूल भुलैया

बूझो तो जानें

- हरी थी मन भरी थी, लाख मोती जड़े थी, राजाजी के बाग में दुशाला ओढ़े खड़ी थी?

  जवाब- भुट्टा

- सुबह-सुबह ही आता हूँ, दुनिया की खबर सुनाता हूँ, बिन मेरे उदास हो जाते, सबका प्यारा रहता हूँ.

  जवाब- अखबार

- वह क्या है जिसे इस्तेमाल करने से पहले तोड़ना पड़ता है?

  जवाब- अंडा

- साल के किस महीने में 28 दिन होते हैं?

  जवाब- साल के सभी महीनों में 28 दिन होते हैं.

- काला रंग मेरी शान, सबको मैं देता हूँ ज्ञान, शिक्षक करते मुझे पर काम, नाम बताकर बनो महान.

  जवाब- ब्लैकबोर्ड

- 2 बेटे और 2 पिता फिल्म देखने गए, उनके पास 3 टिकट थे, फिर भी सबने फिल्म देखी, कैसे?

  जवाब- क्योंकि वे 3 लोग ही थे, दादाजी, पिताजी और बेटा

- वह क्या है, जो खरीदो तो काला, इस्तेमाल करो तो लाल और फेंको तो सफेद होता है?

  जवाब- कोयला

- प्रथम कटे तो दर हो जाऊँ, अंत कटे तो बंद हो जाऊँ, केला मिले तो खाता जाऊँ, बताओ मैं हूँ कौन?

  जवाब-बंदर

- दो सुंदर लड़के, दोनों एक रंग के, एक बिछड़ जाए तो दूसरा काम न आए.

  जवाब- जूते

- एक थाल मोतियों भरा, सबके सिर पर उल्टा धरा, चारों ओर फिरे वो थाल, मोती उससे एक न गिरे.

  जवाब- आकाश और तार

जानकारी

सिंधु नदी घाटी सभ्यता का धर्म: रहस्यमयी आस्था की कहानी

सिंधु घाटी सभ्यता दुनिया की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से एक थी, जो 3300 ईसा पूर्व से 1300 ईसा पूर्व तक फली-फूली. लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि उनके लोग किस धर्म को मानते थे? आज हम जानेंगे सिंधु घाटी सभ्यता के धर्म से जुड़े कुछ मज़ेदार और रोचक तथ्य, जिन्हें जानकर बच्चे और बड़े सभी हैरान रह जाएंगे!

सिंधु घाटी सभ्यता का धर्म कैसा था?- सिंधु घाटी सभ्यता में कोई बड़ा मंदिर या धार्मिक ग्रंथ नहीं मिले, लेकिन उनके खुदाई में मूर्तियाँ और प्रतीक मिले हैं, जो उनकी धार्मिक आस्था को दर्शाते हैं. वे प्रकृति पूजक थे, यानी वे पेड़ों, नदियों, सूर्य और जानवरों की पूजा करते थे. महादेव जैसी मूर्तियाँ मिली हैं, जिनमें एक देवता को तीन चेहरों और सिंहासन पर बैठा दिखाया गया है. इसे भगवान शिव का प्रारंभिक रूप माना जाता है!

पशुपति देवता की मूर्ति - भगवान शिव का पहला रूप? मोहनजोदड़ो से एक सील (मुद्रा) मिली है, जिसमें एक पुरुष देवता ध्यान मुद्रा में बैठा है और उसके चारों ओर जानवर हैं. इसे पशुपति नाथ कहा जाता है और यह भगवान शिव का सबसे पुराना रूप माना जाता है!

देवी मातृका -माँ दुर्गा या पार्वती?- खुदाई में महिला मूर्तियाँ मिली हैं, जिनमें एक महिला को बड़े पेट के साथ दिखाया गया है, जो उर्वरता की देवी हो सकती हैं. यह आज की देवी दुर्गा या माँ पार्वती की प्रारंभिक पूजा का संकेत हो सकता है!

जल का महत्व ङ्क महान स्नानागार का रहस्य!- मोहनजोदड़ो में एक विशाल स्नानागार मिला है, जिससे पता चलता है कि वे जल को शुद्धिकरण के लिए इस्तेमाल करते थे. यह आज के स्नान संस्कार और गंगा स्नान की तरह हो सकता है!

वृक्ष और पशु पूजा- प्रकृति के प्रति श्रद्धा!- खुदाई में पीपल के पेड़ के निशान मिले हैं, जिसे पवित्र माना जाता था. इसके अलावा, गाय, हाथी, सांड और नाग की मूर्तियाँ मिली हैं, जो दिखाती हैं कि वे जानवरों को पूजनीय मानते थे.

स्वास्तिक और यज्ञ ङ्क क्या वे वैदिक धर्म से जुड़े थे?- सिंधु घाटी सभ्यता की खुदाई में स्वास्तिक के निशान मिले हैं, जो आज भी हिंदू धर्म में शुभ माना जाता है! कुछ जगहों पर यज्ञ कुंड जैसी संरचनाएँ भी मिली हैं, जिससे लगता है कि वे आग और हवन को भी महत्व देते थे.

कोई मंदिर नहीं, लेकिन घर-घर में पूजा!- सिंधु घाटी में कोई विशाल मंदिर नहीं मिले, लेकिन छोटे-छोटे मूर्तियाँ और प्रतीक मिले हैं. इसका मतलब है कि लोग अपने घरों में ही पूजा करते थे, जैसे आजकल घरों में पूजा स्थल होते हैं!

कविता

बच्चा होना, कितना अच्छा

बच्चा होना, कितना अच्छा
बच्चों के संग बच्चा होना
कितना अच्छा लगता है!

कभी खेल में हँसना गाना
ता-ता थैया नाच दिखाना,
और कभी नाराज सभी से
हो जाना, फिर मुँह लटकाना.

झूठ-मूठ ऊँ-ऊँ कर रोना
कितना अच्छा लगता है!
गाल फुला आँखें मिचकाना
करना काम कभी बचकाना,
बंदर जैसी हरकत करके
कभी डराना फिर भग जाना.

खाना झूठ मूठ ले दौना
कितना अच्छा लगता है!

हंसी-ठिठोली

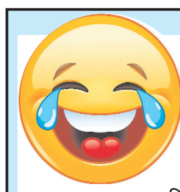

- वो क्या चीज है, जिसमें छेद ही छेद हैं, फिर भी पानी रोक लेती है?

  उत्तर: स्पंज

- ऐसा कौन-सा कमरा है, जिसमें न दरवाज़ा होता है, न खिड़की?

  उत्तर: मशरूम

- वो क्या है, जो जितना निकाला जाए, उतना ही बड़ा होता जाता है?

  उत्तर: गड्ढा

- ऐसी कौन-सी चीज़ है, जो बोल भी सकती है, पर आवाज़ कभी नहीं निकलती?

  उत्तर: मोबाइल चैट/मैसेज

- मैं पंख भी नहीं हूँ, पर हवा में उड़ता हूँ. बताओ मैं कौन?

  उत्तर: गुब्बारा

- ऐसी कौन सी चीज़ है, जिसे उठाना आसान है, पर फेंकना बेहद मुश्किल?

  उत्तर: पंख

- वो क्या है, जो खरीदते भी हो तुम, और बेकार होने पर बेच भी देते हो?

  उत्तर: अख़बार

- वो क्या चीज़ है, जो आपके पास है, लेकिन दूसरे लोग ज़्यादा इस्तेमाल करते हैं?

  उत्तर: आपका 'नाम'

- ऐसी कौन-सी चीज़ है जो रात को आती है पर अंधेरा नहीं करती?

  उत्तर: सपना

प्रेरक प्रसंग

एवरेस्ट पर चढ़ने वाली पहली भारतीय महिला बछेंद्री पाल

बछेंद्री पाल, एक भारतीय पर्वतारोही, का जन्म 24 मई 1954 को हुआ था. उनका जन्म उत्तराखंड राज्य के उत्तरकाशी जिले के नाकुरी गाँव में भोटिया परिवार में हुआ था. उनके पिता एक सीमावर्ती व्यापारी थे जो भारत से तिब्बत तक किराने का सामान आपूर्ति करते थे. 1984 में वह माउंट एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने वाली पहली भारतीय महिला बनीं. उन्होंने इंडो-नेपाली महिला माउंट एवरेस्ट अभियान, द ग्रेट इंडियन वुमेन राफ्टिंग वॉयेज और प्रथम भारतीय महिला ट्रांस-हिमालयी अभियान में राफ्टर्स की एक पूर्ण महिला टीम का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया.

बछेंद्री पाल का जन्म तेनजिंग नोर्गे और एडमंड हिलेरी द्वारा माउंट एवरेस्ट के मूल आरोहण की पहली वर्षगांठ से केवल पांच दिन पहले हुआ था. बछेंद्री पाल का परिवार और रिश्तेदार उनके पेशेवर पर्वतारोही बनने के विचार के खिलाफ थे और चाहते थे कि वह एक शिक्षक बनें.

माउंट एवरेस्ट के चौथे अभियान में, उनकी टीम लगभग तबाह हो गई जब हिमस्खलन ने उनके शिविर को दफन कर दिया. आधे से अधिक समूह ने थकान और चोट के कारण नौकरी छोड़ दी.

उन्होंने अपने 30वें जन्मदिन से एक दिन पहले एवरेस्ट पर चढ़ने की उपलब्धि हासिल की. दुनिया की सबसे ऊंची चोटी पर चढ़ने के बाद बछेंद्री पाल लगातार सक्रिय रहीं. बछेंद्री पाल, प्रेमलता अग्रवाल और माउंट एवरेस्ट शिखर पर चढ़ने वाले शीर्ष पर्वतारोहियों के एक समूह के साथ उत्तरकाशी पहुंचीं और हिमालय के दूरदराज के ऊंचाई वाले गांवों में राहत और बचाव अभियान चलाया, जो 2013 के उत्तर भारत की बाढ़ में तबाह हो गए थे.

बछेंद्री पाल के कुछ मुख्य पुरस्कार

1) भारतीय पर्वतारोहण फाउंडेशन द्वारा पर्वतारोहण में उत्कृष्टता के लिए स्वर्ण पदक (1984)
2) पद्म श्री- भारत गणराज्य का चौथा सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार (1984)
3) शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार, भारत द्वारा स्वर्ण पदक (1985)
4) भारत सरकार द्वारा अर्जुन पुरस्कार (1986)
5) कलकत्ता लेडीज़ स्टडी ग्रुप अवार्ड (1986)
6) गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में सूचीबद्ध (1990)
7) भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय साहसिक पुरस्कार (1994)
8) उत्तर प्रदेश सरकार, भारत द्वारा यश भारती पुरस्कार (1995)
9) पद्म भूषण- भारत गणराज्य का तीसरा सबसे बड़ा नागरिक पुरस्कार (2019)

बिंदु मिलाओ

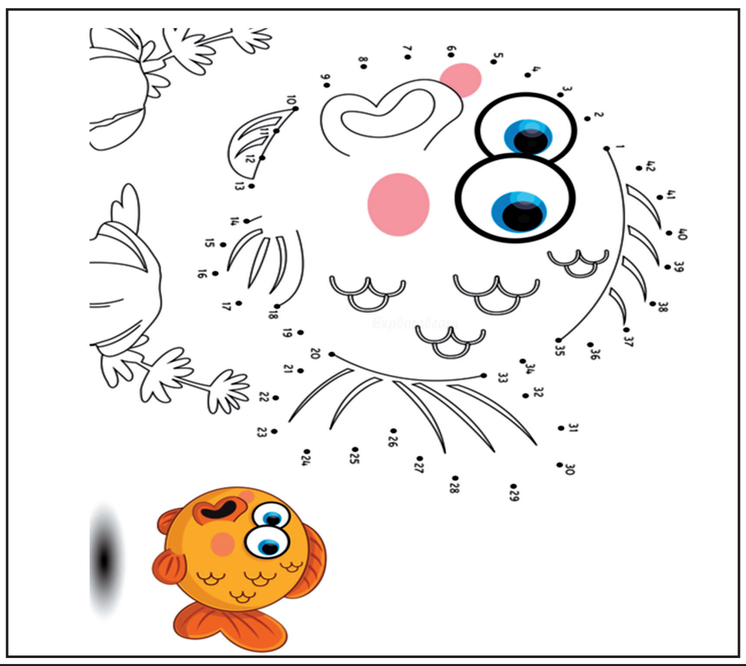

रंग भरो

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें.**